ज्योतिषशास्त्र और वनस्पति

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

ज्योतिषशास्त्र इस संसार के समस्त ज्ञान की प्रथम आधारशिला है, जिसके माध्यम से हमारे महर्षियों ने संसार के समस्त चराचर जगत् के रहस्यों का पता लगाया है। इसी ज्योतिषशास्त्र में वनस्पतियों की चर्चा प्राप्त होती है। ज्योतिषशास्त्र में जहाँ एक ओर वनस्पतियों के आरोपण, उनकी वृद्धि के उपायों की चर्चा की गई है वहीं दूसरी ओर वनस्पतियों का आश्रय लेकर भूमिगत जल का पता लगाया जाता है, स्वप्न का शुभाशुभ फल निर्धारित किया जाता है, शकुनफल बताया जाता है। इसके अतिरिक्त भी ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि से वनस्पतियों का अध्ययन किया गया है। इनका विवरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है-

वृक्षारोपण-

ज्योतिषग्रन्थों में वृक्षारोपण का वर्णन प्राप्त होता है। बृहत्संहिता का कथन है कि वापी,कूप आदि जलाशयों के प्रान्त यदि छायारहित हों तो सुन्दर नहीं होता, अतः जलशयों के किनारे बगीचा लगाना चाहिए-

प्रान्तच्छायाविनिर्मुक्ता न मनोज्ञा जलाशयाः।

यस्मादतो जलप्रान्तेष्वारामान् विनिवेशयेत्।।

आगे कहा गया है कि सब वृक्षों के लिए कोमल भूमि अच्छी होती है। तथा जिस भूमि में बगीचा लगाना हो, उसमें पहले तिल बोना चाहिए। जब तिल फूल जाएं तब उनका उसी भूमि पर मर्दन कर देना चाहिए। अजातशाखा अर्थात् कलमी से भिन्न वृक्षों को शिशिर (माघ, फाल्गुन), कलमी वृक्षों को हेमन्त (मार्गशीर्ष, पौष) में और लम्बी-लम्बी शाखा वाले वृक्षों को वर्षा में लगाना चाहिए-

अजातशाखान् शिशिरे जातशाखान् हिमागमे।

वर्षागमे च सुस्कन्धान् यथादिक्स्थान् प्ररोपयेत्।।

वृक्ष लगाने के क्रम का विवेचन करते हुए कहा गया है कि एक वृक्ष से दूसरा वृक्ष बीस हात पर लगाना उत्तम, सोलह हाथ पर मध्यम और बारह हाथ पर लगाना अधम है। यदि एक वृक्ष दूसरे वृक्ष के समीप हो, परस्पर स्पर्श करता हो या दोनों की जड़ें इकट्ठी हों तो वे वृक्ष पीड़ित होते हैं और अच्छी तरह फल नहीं देते-

उत्तमं विंशतिर्हस्ता मध्यमं षोडशान्तरम्।

स्थानात् स्थानान्तरं कार्यं वृक्षाणां द्वादशावरम्।।

अभ्यासजातास्तरवः संस्पृशन्तः परस्परम्।

मिश्रैर्मूलैश्च न फलं सम्यग्यच्छन्ति पीडिताः।।

वृक्ष रोपने के नक्षत्रों को बतलाते हुए कहा गया है कि तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मूल, विशाखा, पुष्य, श्रवण, अश्विनी, हस्त ये नक्षत्र दिव्य दृष्टि वाले मुनियों ने वृक्ष रोपने में उत्तम कहे हैं-

ध्रुवमृदुलविशाखा गुरुभं श्रवणस्थाश्विनी हस्तः।

उक्तानि दिव्यदृग्भिः पादसंरोपणे भानि।।

वृक्षों की ऋतुओं के अनुसार सिंचाई की जानी चाहिए। लगाये गये वृक्षों को ग्रीष्म ऋतु में साँझ-सबेरे, शीतकाल में एक दिन बाद और वर्षा ऋतु में भूमि सूखने पर सींचना चाहिए-

सायं प्रातश्च घर्मर्तौ शीतकाले दिनान्तरे।

वर्षासु च भुवः शोषे सेक्तव्या रोपिता द्रुमाः।।

वनस्पतियों का व्यवहार और भावी घटनाओं का सङ्केत-

ज्योतिषशास्त्रियों के अनुसार वनस्पतियों का व्यवहार भावी घटनाओं का संकेत करता है। अचानक वृक्ष की शाखा टूट जाने से युद्ध की तैयारियाँ, वृक्षों के हँसने से देश का नाश और वृक्षों के रोने से व्याधि की अधिकता होती है-

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शाखामङ्गेऽस्माद्वृक्षाणां निर्दिशेद्रणोद्योगम्।

हसने देशभ्रंशं रुदिते च व्यादिबाहुल्यम्।।

ऋतुवर्जित काल में वृक्षों में पुष्प और फलों की उत्पत्ति होने से राज्य में विभेद, छोटे वृक्ष में बहुत पुष्प आने से बालकों का नाश और वृक्षों से दूध निकलने पर द्रव्यों का नाश होता है-

राष्ट्रविभेदस्त्वनृतौ बालबधोऽतीव कुसुमिते बाले।

वृक्षात् क्षीरस्रावे सर्वद्रव्यक्षयो भवति।।

वृक्ष से मद्य निकलने पर अश्वादि वाहनों का नाश, रक्त निकलने पर युद्ध, शहद निकलने पर रोग, तेल निकलने पर रोग, तेल निकलने पर दुर्भिक्ष का भय और वृक्ष से जल निकलने पर अधिक भय होता है-

मद्ये वाहननाशः सङ्ग्रामः शोणिते मधुनि रोगः।

स्नेहे दुर्भिक्षभयं महद्भयं निःस्रुते सलिले।।

सूखे हुए वृक्षों में विरोह (पुनः अङ्कुर) होने से बल और अन्न का नाश तथा गिरे हुए वृक्षों के अपने आप उठने से दैवजनित भय होता है-

शुष्कविरोहे वीर्यान्नसङ्क्षयः शोषणे च विरजानाम्।

पतितानामुत्थाने स्वयं भयं दैवजनितं च।।

कमल, जौ आदि के एक नाल में दो या तीन बाल की उत्पत्ति हो तो क्षेत्र के अधिपति का मरण होता है तथा यमल पुष्प या फलों की उत्पत्ति हो तो भी उस के अधिपति का मरण होता है-

नालेऽब्जयवादीनामेकस्मिन् द्वित्रिसम्भवो मरणम्।

कथयति तदधिपतीनां यमलं जातं च कुसुमफलम्।।

वृक्षों में फल और फूलों की वृद्धि देखकर द्रव्यों की सुलभता तथा धान्यों की निष्पत्ति जाननी चाहिए। शाल वृक्ष पर फल और फूलों की वृद्धि से कलम शाली रक्त अशोक से रक्त धान्य, दूधी से पाण्डुक और नील अशोक पर फल, फूल की वृद्धि से सूकरक की वृद्धि जाननी चाहिए-

शालेन कलमशाली रक्ताशोकेन रक्ताशालिश्च।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

पाण्डूकः क्षीरिकया नीलाशोकेन सूकरकः।।

वटवृक्ष से यव, तिन्दुक से साठी धान्य और पीपल से सब धान्यों की वृद्धि देखनी चाहिए। जामुन से तिल, माष आदि, शिरीष से प्रियङ्गु, महुए से गेहूँ और सप्तपर्ण वृक्ष पर फल, फूल की वृद्धि से यव की वृद्धि जाननी चाहिए। वासन्ती लता और कुन्द पुष्पों में फल, पुष्पों की वृद्धि से कपास, असना से सरसों, बेर से कुलथी और करंज में फल-पुष्पों की वृद्धि से मूँग की वृद्धि जाननी चाहिए। वेतस वृक्ष में फल-पुष्पों की वृद्धि से अलसी, पलाश से कोदों, तिलक से शंख, मोती और चाँदी की तथा इङ्गुदी वृक्षों में फल-पुष्पों से सन की वृद्धि जाननी चाहिए। हस्तिकर्ण वृक्ष पर फल-पुष्पों की वृद्धि से हाथी, अश्वकर्ण से घोड़ा, पाटला से गाय और कदली वृक्ष पर फल-पुष्पों की वृद्धि से बकरी, भेद आदि की वृद्धि होती है। चम्पा फूल की वृद्धि से सोना, बन्धुजीव से मूंगा, कुरबक से वज्र और नन्दिकावर्त से वैदूर्य मणि की वृद्धि होती है। सिन्धुवास से मोती, कुसुम्भ से केशर, रक्तकमल से राजा और नील कमल से मन्त्री की वृद्धि देखनी चाहिए। सुवर्णपुष्प से व्यापारी, कमल से ब्राह्मण, कुमुद से पुरोहित, सुगन्ध वस्तु से सेनापति और आक से सोने की वृद्धि देखनी चाहिए। आम की वृद्धि से मनुष्यों का कुशल, भल्लातक से भय, पीलु से आरोग्य, खैर तथा शमी से दुर्भिक्ष और अर्जुन वृक्ष से सुन्दर वृष्टि कहनी चाहिए। निम्ब और नागकेशर पर पुष्पों की वृद्धि से सुभिक्ष, कपित्थ से वायु, निचुल से अवृष्टि का भय और कुटज से व्याधिभय का ज्ञान करना चाहिए। जिस समय वृक्ष गुल्म और लताओं के पत्ते चिकने तथा छिद्ररहित दिखाई दें उस समय सुन्दर वृष्टि होती है। यदि वे रूक्ष और छिद्रयुत हों तो थोड़ी वृष्टि होती है।

वनस्पतियाँ एवं भूमिगत जल-

विविध प्रकार के वृक्ष, वनस्पतियाँ भूमिगत जल का भी ज्ञान कराती हैं। इस विद्या को दकार्गल नाम से जाना जाता है। 'दक' शब्द 'उदक' का ही रूप है, अतः दक का अर्थ है जल। दकार्गल का अर्थ है पानी की अर्गला अर्थात् पानी की धारा। इस प्रकार इस विज्ञान के अन्तर्गत आसपास की वनस्पति को देखकर ही जल कितने भूमि के नीचे है, का ज्ञान कर लिय जाता है। प्रख्यात ज्योतिर्विद् वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में कहा है कि जिस तरह मनुष्यों के अंग में नाडियाँ हैं, उसी तरह भूमि में ऊँची-नीची शिराएं

हैं। आकाश से केवल एक स्वाद वाला जल पृथिवी पर गिरता है किन्तु वही जल पृथिवी की विशेषता से तत्तत्स्थान में अनेक प्रकार का रसक और स्वाद वाला हो जाता है। इस तरह भूमि के वर्ण और रस के समान जल के रस और वर्ण सिद्ध होते हैं, अतः भूमि, वर्ण और रस का परीक्षणपूर्वक जल के रस और स्वाद का परीक्षण करना चाहिए। बृहत्संहिता में आगे वनस्पतियों का आश्रय लेकर जलोत्पत्ति के विषय में बताया गया है।यहाँ एक-दो सिद्धान्तों का उल्लेख किया जा रहा है-

(क) जामुन के वृक्ष से पूर्व तरफ समीप में ही बाँबी (वल्मीक) हो तो उससे तीन हाथ दक्षिण दिशा में दो पुरुष नीचे मधुर जल मिलता है-

जम्बूवृक्षस्य प्राग्वल्मीको यदि भवेत् समीपस्थः।

तस्माद्दक्षिणपार्श्वे सलिलं पुरुषद्वये स्वादु।।

(ख) वल्मीक युक्त निर्गुण्डी हो तो उससे तीन हाथ दक्षिण दिशा में सवा दो पुरुष नीचे कभी नहीं सुखने वाला जल होता है-

वल्मीकोपचितायां निर्गुण्ड्यां दक्षिणेन कथितकरैः।

पुरुषद्वये सपादे स्वादु जलं भवति चाशोष्यम्।।

ग्रह एवं नक्षत्रों से वनस्पतियों का सम्बन्ध-

ज्योतिषशास्त्र में विविध ग्रह एवं नक्षत्रों को अनेक प्रकार के वृक्षों का अधिपति कहा गया है और इनसे वृक्ष, वनस्पति की उत्पत्ति भी कही गई है। सर्वप्रथम ग्रहों का वृक्षों पर आधिपत्य बताया जा रहा है। बृहत्पराशरहोराशास्त्र के अनुसार सूर्य मोटे वृक्षों को, शनि कुत्सित या अभद्र वृक्षों को, चन्द्रमा दुग्धपूर्ण वृक्षों को, मंगल कटु वनस्पतियों को, गुरु सफल (फल सहित), बुध निष्फल (फल रहित) वृक्षों को, शुक्र फूल के वृक्षों को उत्पन्न करते हैं-

स्थूलान् जनयति त्वर्को दुर्भगान् सूर्यपुत्रकः।

क्षीरोपेतांस्तथा चन्द्रः कटुकाद्यान् धरासुतः।।

सफलानफलाञ्जीवबुधौ पुष्पतरून् कविः।

नीरसान् सूर्यपुत्रश्च एवं ज्ञेयाः खगा द्विज।।

ज्योतिषशास्त्र में नक्षत्रों से वृक्षों की उत्पत्ति बताई गई है। अश्विनी नक्षत्र से बांसा तथा जलोद्भव वृक्ष, वनस्पति, भरणी से फालसा, कृत्तिका से गूलर, रोहिणी से जामुन वृक्ष उत्पन्न हुआ है। मृगशिरा नक्षत्र से खैर, आर्द्रा से बहेड़ा, पुनर्वसु से बांस तथा पुष्य नक्षत्र से पीपल उत्पन्न हुआ है। आश्लेषा से नागवृक्ष, मघा से बड़, पूर्वाफाल्गुनी से ढाक तथा उत्तराफाल्गुनी से पिलखन उत्पन्न हुआ। हस्त से रिठडा, चित्रा से नारियल वृक्ष, स्वाती से अर्जुन वृक्ष, विशाखा से कटाय, अनुराधा से बकुल, ज्येष्ठा से देवदारु, मूल से सालवृक्ष, पूर्वाषाढा से जलवेंत, उत्तराषाढा से पनस, श्रवण से आक, धनिष्ठा से शमी, शतभिषा से कदम्ब, पूर्वाभाद्रपद से आम्रवृक्ष, उत्तराभाद्रपद से निम्ब का वृक्ष तथा रेवती से महुआ वृक्ष उत्पन्न हुआ है।

सस्य विचार और ग्रह योग-

सस्य सम्बन्धी विचार अर्थात् अनेक प्रकार के सस्यों की उत्पत्ति तथा उनके उचित विकास का ग्रह व नक्षत्र की स्थिति के अनुसार फसल की उत्तम वृद्धि होगी या फसल नाश होगा इस प्रकार के विचारों के आधार पर फल का कथन ज्योतिषशास्त्र में किया गया है। बृहत्संहिता में इसकी विस्तृत चर्चा प्राप्त होती है जिनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है-

सूर्य के आठवें राशि (वृश्चिक) में गत होने के समय कुम्भ राशि में गुरु और सिंह राशि में चन्द्रमा बैठा हो या सिंह राशि में गुरु और कुम्भ राशि में चन्द्रमा बैठा हो तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की वृद्धि होती है-

अष्टमराशिगतेऽर्के गुरुशशिनोः कुम्भसिंहसंस्थितयोः।

सिंहघटसंस्थयोर्वा निष्पत्तिग्रीष्मसस्यस्य।।

यदि सूर्य से द्वितीय या द्वादश में शुक्र या बुध या दोनों एक साथ बैठे हों तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की निष्पत्ति होती है। यदि पूर्वोक्त योगों में बृहस्पति की दृष्टि हो तो ग्रीष्म ऋतु में होने वाले धान्यों की उत्तम निष्पत्ति होती है-

अर्कात्सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव वा स्थितयोः।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्ट्या।।

दो शुभ ग्रहों के मध्य में स्थित होकर सूर्य वृश्चिक राशि में स्थित हो और सूर्य से सप्तम में गुरु और चन्द्रमा हो तो धान्यों की उत्तम निष्पत्ति होती है। तथा वृश्चिक के आदि में सूर्य और उससे द्वितीय में गुरु हो तो धान्यों की आधी निष्पत्ति होती है-

शुभमध्येऽलिनि सूर्याद्गुरुशशिनोः सप्तमे परा सम्पत्।

अल्यादिस्थे सवितरि गुरौ द्वितीयेऽर्धनिष्पत्तिः।।

यदि वृश्चिक राशि में स्थित होकर सूर्य दो पापग्रहों के मध्य में स्थित हो तो धान्यों का नाश करता है। सप्तम राशि में पाप ग्रह बैठा हो तो धान्यों की उत्पत्ति का भी नाश होता है-

मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः।

पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाशयति।।

वृश्चिक स्थित सूर्य से सप्तम और षष्ठ स्थान में दो पापग्रह मङ्गल और शनि बैठे हों तो धान्यों की निष्पत्ति होती है। किन्तु धान्यों का मूल्य मंहगा होता है-

वृश्चिकसंस्थादर्कात् सप्तमषष्ठोपगौ यदा क्रूरौ।

भवति तदा निष्पत्तिः सस्यानामर्घपरिहानिः।।

धनु, मकर और कुम्भ में स्थित सूर्य यदि शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो शारदीय धान्यों की समर्घता तथा उभयोपयोग्यता समझनी चाहिए। मेषादि या धनुरादि तीन राशियों में स्थित सूर्य यदि पापग्रह से दृष्ट या युत हो तो उलटा फल समझना चाहिए-

कार्मुकमृगघटसंस्थः शारदसस्यस्य तद्वदेव रविः।

संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूरदृग्योगात्।।

मुहुर्त व वनस्पति-

कृषि वालों के लिए किस चीज की खेती कब करना चाहिए, कब हल चलाना चाहिए, किस काल में किस अन्न का बीज बोना चाहिए-इनका वर्णन ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थों में प्राप्त होता है। बृहद्दैवज्ञरञ्जन के

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

अनुसार अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रोहिणी, उत्तराभाद्रपदा, मंगलवार को भूमि में प्रवेश करना चाहिए- "मैत्राश्विवसुरोहिण्यां साहिर्बुध्न्यं कुजाह्निभुक्"। स्वाती, उत्तरा, पुष्य, आर्द्रा, भरणी, मघा नक्षत्र में पूर्वस्वीकृत भूमि में प्रवेश करना चाहिए। वारों में मंगलवार श्रेष्ठ, बुध, गुरु मध्यम, विशेष स्थिति में सोमवार में और अवशिष्ट वारों में प्रवेश नहीं करना चाहिए-

स्वात्युत्तरे च पुष्ये च रौद्रे याम्ये च पैतृभे।

कुर्यात्प्रवेशनं भूमेः प्रथमस्वीकृतासु च।।

एतेषु कौजः श्रेष्ठोत्र मध्यमो बुधजीवयोः।

शेषा वारा विवर्ज्याः स्युः सोमवारे कदाचन।।

रोहिणी, पुनर्वसु, मूल, अश्विनी, रेवती, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, धनिष्ठा, अनुराधा नक्षत्र खेती के काम में श्रेष्ठ होते हैं-

रोहिण्यादित्यमूलाश्विपौष्णहस्तोत्तरात्रयम्।

मृगवस्वानुराधाश्च कृषिकर्मणि पूजिताः।।

जेठ मास, मूल में या आषाढ मास में सब तरह के बीजों का वपन भूमि में करना चाहिए क्योंकि यह पृथिवी का आर्तवकाल है-

ज्येष्ठाख्ये मासि मूलाख्ये आषाढे च विशेषतः।

सर्वेषां बीजजातीनां धरायामार्तवो भवेत्।।

शतभिषा, श्रवण, स्वाती, पुष्य, आश्लेषा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मूल, अनुराधा, हस्त, पूर्वाषाढा, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र बीज बोने में श्रेष्ठ, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी मध्यम और अन्य 9 नक्षत्र बीज वपन में वर्जित होती है। वर्जनीय नक्षत्रों में भी शुभ योगों में बीज बोना शुभ होता है-

वारुणं वैष्णवं स्वातीपुष्ये सार्पोत्तरात्रयः।

रोहिणीमूलमैत्राश्च हस्तपूषाभगास्तथा।।

चतुर्दशैताः तारास्युर्बीजनिर्वापने तथा।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वासवादित्यसौम्याश्चितारा: स्युर्मध्यमावहा:।।

अन्याश्च नव तारा: स्युर्वर्ज्या बीजनिवापने।

वर्ज्येष्वपि च योगेषु शुभं स्याद्बीजवापने।।

दोनों पक्षों की विषम तिथियों में प्रतिपदा, नवमी को तथा सम तिथियों में अमावास्या का त्याग करके श्रेष्ठ, द्वितीया, दशमी, षष्ठी तिथि मध्यम और अन्य सम तिथि बीज बोने में त्याज्य होती है-

ओजाश्च तिथय: श्रेष्ठा: पक्षयोरुभयोरपि।

प्रथमां नवमीं युग्माममावास्या च वर्जयेत्।।

द्वितीया दशमी षष्ठी मध्यमास्तिथय: परे।

वर्ज्यास्युस्तिथयो युग्मा बीजनिर्वापणे बुधै:।।

मकर, वृष, कर्क, सिंह व मीन लग्न सदा अच्छा फल देने वाली, तुला, मिथुन, कुम्भ मध्यम और अवशिष्ट त्याज्य होती हैं-

मृगगोकर्किसिंहा:स्युर्मीनश्च शुभदा सदा।

तुलामिथुनकुम्भास्युर्मध्यमा वर्जिता।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi